चर्चा–ए–गोश्तखोरी

आर्यसमाजी विद्वानों के मांसाहार विषय पर प्राकृतिक–नैतिक एवं स्वाभाविक सवालों के जीव–जन्तुओं की फितरत और आदत से दिलचस्प जवाब

सब्ज़ीखोरी–गोश्तखोरी (मांसाहार–शाकाहार) विषय पर बहस(चर्चा) जो

मौलाना हकीम बशीर अहमद

और **महात्मा नित्यानंद** आर्य–समाजी के दरमियान हुई, जिसमें इस्लाम का बोलबाला रहा। अखबार ''मुसलमान'' अमृतसर ने उसी वक्त (22 नवम्बर 1910 ई. से लेकर 25 अप्रैल 1911ई.) छापा और फिर अलेहदा किताबी शक्ल में जमीमा (परिशिष्ट)के साथ लाया गया। प्रस्तुत पुस्तक इन्टरनेट www.archive.org में सुरक्षित उर्दू किताब ''मुबाहिसा–ए–गोश्तखोरी'' का हिन्दी रूपान्तर है

आवरण एवं हिन्दी रूपान्तरः

मुहम्मद उमर कैरानवी

वन्दे ईश्वरम् प्रकाशन

इस्लाम दर्शन केन्द्र देवबन्द

ayazdbd@gmail.com

a_yaz2004@yahoo.com

इन्टरनेट www.archive.org परं सुरक्षित उर्दू किताब ''मुबाहिसा–ए–गोश्तखोरी'' का टाइटिल

أُحِلَّتْ لَكُم بَهِيمَةُ الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ

حلال ہوئے تم کو چوپائے مواشی اور اس کے سوائے جو تم کو سنائے جاتے ہیں

مُباحثہ

متعلق

گوشت خوری

جو

۱۳۲۸ بمقام اٹاوہ

مولانا حکیم بشیر احمد صاحب و مہاتما نتیانند سماجی

کے درمیان ہوا اور اسلام کا بول بالا رہا اخبار "مسلمان" امرتسر نے اسی وقت شائع کیا۔ اور اب علیحدہ کتابی شکل میں لایا گیا

مطبوعہ مکتبہ ابراہیمیہ اسٹیم پریس حیدرآباد دکن

विषय सूची

बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह ही वह ज़ात हैं जिस के लिए सब तारीफें हैं उसने आदम को मिट्टी से बनाया और उनसे हव्वा को और हव्वा और आदम से तमाम इन्सानों को पैदा किया **الـذی خـلـقـکم من نفس واحدة وخلق منها زوجها وبث منهما رجـالا کثیـراونسـاءً** और जिस तरह इन्सान मिट्टी से पैदा हुआ है इसी तरह फिर एक रोज़ मिट्टी हो जायेगा **من هـا خـلـقـکم وفیها نعیدکم** इसी से (यानी मिट्टी से) तुम को बनाया है और एक रोज़ वही तुम हो जाओगे।

हमारी हिदायत के लिए हमीं में से बडी–बडी हस्तियाँ पैदा कीं जिन को पैग़म्बर कहते हैं और उन को हर उमूर(कार्यों,फन) के मुतअल्लिक़ बतलाया गया और हुक्म दिया गया कि उन चीज़ों को वह, हमें सिखलायें **یـا یها الرسول بلغ مـا انـزل الیـک**(ए रसूल जो कुछ हमने तुम पर उतारा है बिला कम व कास्त हमारे पैग़ाम पहुँचा दो।) जिसने उनका हुकम माना वह निजात पाया और जिसने ना–फरमानी की वह गुमराह और अ़ज़ाब में मुब्तला हुआ।

उन पैग़म्बरों के नायबीन(उप,उत्तराधिकारी) मुक़र्रर हुए जो हमको दुनिया और आख़िरत की तालीम देते हैं जिनको सिर्फ दुनिया के इन्तिज़ाम सुपुर्द किये गये वह बादशाह कहलाते हैं और जिनके ज़िम्मे दीनी यानी आखिरत के उमूर(फन,कार्यों) की दुरूस्तगी दी गयी वह आलिम हैं इसलिए इन दोनों के हुक्म पर चलना हमारा फर्ज़ है चुनांचे इरशाद होता है **اطیـعوااللـہ واطیـعوا الرسول واولی الا مر منکم**

(ऐ ईमान वालो) हुकम मानो अल्लाह का और हुकम मानो रसूल का और जो इख़्तियार दिये गये हैं (मुसलमान बादशाह को)। इस आयत में अल्लाह और उसके रसूल और बादशाह–ए–वक़्त का ज़िक्र है, और जहाँ पर यह मौजूद न हों उनके नायब(उप,उत्तराधिकारी) की ताबेदारी लाज़िम है।

अल्लाह ने इन्सान को अशरफुल मख़्लूक़ात(जानदारों–प्राणियों में सर्वोत्तम) बनाया है जिसकी बिना पर वह सब मख़्लूक़(जानदारों) पर हर क़िस्म का हक़ रखता है। बशर्ते कि वह शराफत के रास्ते से क़दम बाहर न निकाले इसी बिना पर वह जानवरों को जिस तरह चाहे काम में ला सकता है। मसलन उस पर सवारी कर सकता है। उसका दूध पी सकता है। उसकी खाल के जूते बना

सकता है। और (कुएं से पानी निकालने के लिए) डोल तैयार कर सकता है। उसकी चरबी से चिराग़ रौशन कर सकता है। और मशीनों में बजाये तेल के [कोल्हू, हल, हरट] काम में ला सकता है। उसके बाल और हड्डी अपने इस्तेमाल में खर्च कर सकता है। और गोश्त भी खा सकता है मगर कोई तकलीफ उन को नही दे सकता और बिना खास ज़रूरत उनका एक बाल भी नही तोड़ सकता बल्कि उनकी हर तकलीफ को रफा करना उसका फर्ज़ है। उनको भूका या प्यासा रखना या सर्दी या गर्मी से ईज़ा(तकलीफ) देना सख़्त गुनाह है।

वह चीज़ बहतर है जो मालिक की मर्ज़ी के मुताबिक़ हो और जो ख़िलाफ हो वह कैसी ही अच्छी मालूम होती हो वह बहतर नहीं है। मालिक की मर्ज़ी का पता, जब तक वह ख़ुद न कहे नहीं चल सकता। और जो हस्तियाँ आला हैं वह अदना हस्ती से मुखातिब नहीं होती जैसे बादशाह या कोई बडा हाकिम वह जब बात करेगा तो ऐसी हस्ती से करेगा जिस का मर्तबा(रूत्बा) उसके बाद ही हो या दूसरों से बुजुर्ग हो। ख़ुदावंद ताला का भी यही हाल है कि वह अपने हर बंदे से बात नही करता बल्कि जो उसका बरगुज़ीदा(श्रेष्ठ) बंदा होता है उसी से वह मुख़ातिब होता है जिसको पैग़म्बर या रसूल कहते हैं। बस रसूल हम को जो हुक्म दे वही मालिक की मर्ज़ी के मुताबिक़ है और बेहतर है और हम कोई बात कैसी ही बहतर करें मगर क्यूंकि उसमें मालिक की मर्ज़ी शामिल नही इसलिए वह हरगिज़ बेहतर नही हो सकती ।

नतीजा यह निकला कि मज़हबी कुल उमूर(फन,कार्य, बातें) क़बिले तस्लीम हैं और उसके ख़िलाफ जुमला अहकाम और राये मरदूद[रद]। इस ऐतबार पर गोश्त का खाना क्यूंकि मज़हबी तरीक़े पर दुरूस्त और जायज़ है इसलिए हरगिज़ उसमें चे मी गोई को दखल नहीं हो सकता और न किसी तरह का शक पैदा हो सकता है और न अख़लाक़ी(नैतिक) ऐतराज़ हो सकता है और तिब्बी(चिकित्सा सम्बंधी) ऐतराज़ करना जिहालत और दीवानगी है। ख़ुदा ने हम को साफ इजाज़त गोश्त खाने की दी है चुनांचे इरशाद फरमाता है। **ومن الانعام حمولة وفر شا كلوا مما رزقكم الله ولا تتبعوا اخطوات الشيطٰن انه لكم عدو مبين ثمٰنية ازواج من الضا ن اثنين وامن المعزاثنين قل ءٰالذكرين حر م ام الا نثيين اما اشتملت عليه ارحام الا نثيين نبيؤنى بعلم ان كنتم صٰدقين ومن الا بل ا ثنين ومن البقر اثنينءآالذكرين حر م ام الا نثيين اماشتملت عليه ارحا م الا نثيين ام كنتم شهداء اذ وصكم الله بهذا:**

अनुवाद कुरआनः और चौपायों में दो तरह के हैं एक लायक़ सवारी के और एक सवारी के क़ाबिल नही (जैसे छोटा ऊँट का बच्चा) खाओ उस चीज़ से जो रोज़ी दी अल्लाह ने तुम को, और पैरवी न करो शैतान के रास्तों की (खेती और जानवरों के हराम करने में) बे–शुबा शैतान तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। पैदा किया अल्लाह ने चौपायों में से आठ किस्में।

भैड़ और दुंम्बे से 2 यानी नर व मादा, बकरी से 2 यानी नर व मादा,
ऊँट से 2 यानी नर व मादा, गाये से 2 यानी नर व मादा

यह सब जानवर अल्लाह ने तुम्हारे खाने के लिए हलाल कर दिये हैं और बाक़ी आयत (कुरआन 6:142–144) का मतलब यह है कि नाफरमान कुछ को हराम और कुछ को हलाल और कुछ का कुछ हिस्सा हराम बतलाते है वह कुछ चीज़ मानने की नही है तुम उन तमाम जानवरों को जिन का ऊपर नाम लिया गया ख़ुशी से खाओ।

ख़ुदा का शुक्र है कि उसने हमको नबाती पैदावार (सब्जी, गेहूं, दाल आदि) के अलावा हेवानी ग़िज़ा(मांस, मछली) के खाने की इजाज़त दी और जो उनमें से नाक़िस(बेकार, नुक्सान देने वाली) और मुजिर(सेहत के लिए नुक्सान दने वाली) हैं उनको मना फरमा दिया जैसे सुअर और हलाल जानवरों* के भी खाने के तरीक़े इरशाद फरमा दिये उसको हरगिज़ न खाना जो ख़ुद मर गया हो और न उसको जिसको किसी दरिंदे ने मार डाला हो क्योंकि यह उसी का हक़ है जिसने उसको शिकार किया हो अगर तुम उसका शिकार ले लोगे तो तुम में और उसमें जूत–पेज़ार चल जायेगी, और यह एक कम हिम्मती की भी निशानी है और बहुत से जानवरों में ज़हर भी होता है और इसी तरह जो ख़ुद मर जाता है वह भी अकसर बीमारी की वजह से मरता है

....फुटनोट..... *..

حر مت عليكم الميتةوالدم ولحم الخنزير ومآاحل لغير الله • به والمنخنقة والمو عودة ولمترا دية والنطيحة وما اكل السبع الا ماذكيتم وما ذبح على النصب हराम हुआ तुम पर मुरदार और ख़ून और गोश्त सुअर का और जिस चीज़ पर नाम पुकारा अल्लाह के सिवाये का जो मर गया घुट कर या चोट से या गिर कर या सींग मारने से और जिसको खाया फाडने वाले ने मगर जो तुम ने ज़िबह कर लिया (वह हलाल) है (कुरआन 6:145)..

....

क्योंकि यह उसी का हक़ है जिसने उसको शिकार किया हो अगर तुम उसका शिकार ले लोगे तो तुम में और उसमें जूत–पेज़ार चल जायेगी नीज़ यह एक कम हिम्मती की भी निशानी है और बहुत से जानवरों में ज़हर भी होता है और इसी तरह जो खुद मर जाता है वह भी अकसर बीमारी की वजह से मरता है और अकसर बीमारियाँ जहरीला असर रखती हैं। अगर इन्सान दूसरे का शिकार किया हुआ खाने लगता है तो उन जानवरों की नज़रों में ज़लील हो जाता और वह उसको ज़्यादा हलाक करने लगते। जो ग़ैर की कमाई पर बसर करते हैं वह कमाने वाले की नज़रों में ज़लील रहते है। किसी जानवर का शिकार किया हुआ गोया उसकी कमाई है। मैं ज़रूर कहुँगा बिला शक दुनिया की और गिज़ाओं (खाने की चीजों) से गोश्त में हर क़िस्म के फवाईद(लाभ) ज़्यादा हैं अलबत्ता उसको कम मिक़दार में खाना चाहिये। चूंकि मैं हर तरह गोश्त खाना इन्सान का हक़ समझता हूँ। इसलिए जब मैं ने यह सुना कि कोई साहब आज गोश्त के लिए यह बयान दे रहे हैं कि इन्सान उसके खाने का मुस्तहिक़(हकदार) नहीं है तो मुझसे खामोश न रहा गया और मैंने उस नाहक़ फैसले की फौरन तरदीद की और हक़ को ज़ाहिर कर दिया और वह आपके सामने अगली पंक्तियों में लिखा है। जिस मज़मून को में हदिया नाज़रीन कर रहा हूँ अलेहदा–अलेहदा यह मेरा मज़मून अख़बार मुसलमान अमृतसर में मुबाहिसों के बाद ही छप चुका है। 22 नवम्बर 1910 ई. से लेकर 25 अप्रैल 1911 ई. तक के पर्चों में यह मज़मून आप को मिल सकता है, जिसकी मुताबक़त अगर सन् हिजरी से की जाये तो 19 जीकादा 1328 हिजरी से लेकर 25 रबी–उस्सानी 1329 हिजरी तक होती है। क्यूंकि यह मज़मून अपनी तरह का पहला मज़मून था इसलिए मेरा ख़याल उसी वक़्त से इसको अलेहदा किताबी शकल में शाए करने का था मगर **كل امرٍ مر هون با وقاتِه** हर काम के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है अब तक इस की इशाअत का वक़्त न आया था हालांकि मैं ने इस अर्से में दो किताबें और नब्बे(90) रिसाले (संक्षिप्त पुस्तकें) अल मुआलिज (इलाज के सम्बन्ध में) के लिखकर छपवाए, फिर भी ख़ुदा का शुक्र है कि यह किताब भी मेरी जिन्दगी ही में छप कर पाठकों तक पहुंच गयी।

तम्हीद मुबाहिसा (प्रस्तावना)

मैं अपने डाक्टरी पेशे के लिहाज़ से हमेशा मज़हबी बहस से दूर रहता हूँ, नवम्बर 1910 ई0 में एक इत्तिफाक़ी तौर पर यह मुआमला पेश आगया अगरचे यह एक मज़हबी बहस थी मगर उसका ज़ाहिरी रूख तिब्बी अर्थात

चिकित्सा–सम्बन्धी था इसलिए मैं ने उसको मन्जूर कर लिया। जुमे का दिन और ग्यारह बजे का वक़्त था मौहल्ले के एक अंग्रेज़ी जानने वाले तालिबे इल्म(विद्यार्थी) मेरे पास आये। मैंने पूछा कहाँ से आ रहे हो? कहा कि स्वामी नित्यानन्द और योगेंन्द्रपाल साहब आर्यो के नामी पंडित आये हुए हैं उनके जलसे से वापस आ रहा हूँ। मैं ने मज़मून–विषय के मुताल्लिक़ दरयाफत किया तो कहा कि गोश्त–खोरी के मुताल्लिक़ बयान था और तिब्बी अर्थात डाक्टरी तरीक़े पर यह साबित किया गया है कि गोश्त खाना जायज़ नही और नुक़सान देने वाला है। यह सुनकर मैं ने कहा कि अगर डाक्टरी दृष्टि से नाजायज़ साबित कर दें तो में गोश्त तर्क करने (छोडने) को तैय्यार हूँ.......यह तालिबे इल्म दोबारा शाम मग़रिब की नमाज़ के वक़्त मेरे पास आये और स्वामी जी की तरफ से मुझे पैग़ाम दिया कि वह मुझसे गोशतखोरी(मांस खाने) के मुताल्लिक़ तिब्बी तरीक़े(डाक्टरी दृष्टि) पर बहस करने को तैय्यार हैं और यह भी कहा कि जल्द आयें क्योंकि वह आज ही रात की गाडी से वापस रवाना होने वाले हैं ।

जो कुछ मैं ने उन तालिबे इल्म साहब (विद्यार्थी) से दोपहर को कहा था उसका मक़सद यह न था कि में वाक़ई बहस करूँगा मगर उस वक़्त मेरे लिए सख़्त ज़िल्लत थी अगर मैं उनके बुलाने पर नहीं जाता। क्यूंकि मैं पहले से उस काम के लिए तैयार न था। मैं ने दो–एक मिनट इस बारे में गौर किया तो यह बात मेरे दिल में आई कि अगर मैं हक़ पर हुँ तो ज़रूर कामयाबी होगी और क्यूंकि यह अमर मज़हबी तौर पर जायज़ है और मज़हब हमारा सच्चा है इसलिए कामयाबी का पूरा यक़ीन हुआ। मैं फैारन अकेला उस विद्यार्थी के साथ हो गया। बाद मिज़ाज पुरसी के मुझे सवाल करने का मौक़ा दिया गया। मैं ने अपनी तक़रीर इस तरह शरू की।

मुबाहिसा(चर्चा, शास्त्रार्थ)

गोश्त–ख़ोरी के मुताल्लिक़ मैं कुछ दलाइल(तर्क) बयान करना चाहता हूँ जिनको किसी मज़हब से ताल्लुक़ न होगा। फिर मैंने कहा कि गोर करने से मालूम होता है कि आदमी की पैदाईश ख़ून से हुई है (और उसका तफसील से सुबूत भी दिया) और जब वह शिकम मादर(मां के पेट) से आया तो वह गोश्त(मांस) का था (जमा हुआ खून गोश्त–मांस कहलाता है यानी जिस्म के अन्दर खून खास तरकीब से जम कर गोश्त–मांस बन जाता है) और इस वक़्त पर भी गोश्त ही का है।

जब वह शिकम मादर (मां के पेट) में था अपनी रोज़ी (ग़िज़ा–खुराक)

अपनी कोशिशों से हासिल न कर सकता था, कुदरत ने उसकी रोज़ी वहाँ ख़ून मुक़र्रर की थी और और जब शिकम मादर से बाहर आया वह ग़िज़ा यानी ख़ून न मिलने की वजह से ब–मजबूरी दूसरी अश्या–चीजों पर बसर करने लगा जिनको हम अपनी कम समझी से गिज़ा(खुराक) समझते हैं। मगर दर–हक़ीक़त यह उसकी ग़िज़ा(खुराक) नही है बल्कि इस वक़्त भी उसकी ग़िज़ा वही है जो कुदरत ने उसको शिकमे मादर में(मां के पेट) मुक़र्रर की थी यानी ख़ून इस की तफसील यह है कि जो ग़िजा(खुराक) हम खाते हैं व जुज़(हिस्सा) व बदन इन्सान नहीं होती बल्कि अव्वल उसका ख़ून बनता है फिर यह खून इन्सान के बदन की ग़िज़ा होती है। अतिब्बा(हकीमों) के पास ग़िज़ा की दो क़िस्में की गई हैं (1)गिज़ा बिल कूव्वत(ताकत) (2) गिज़ा बिल फ़ैअल(काम)

गिज़ा बिल कूव्वत वह हैं जो खुद ग़िज़ा(खुराक)नहीं होती बल्कि सलाहियत ग़िज़ा बनने की रखती है जैसे लकडी, कि खुद कोयला नही है बल्कि सलाहियत कोयला बनने की रखती हैं पस इसी तरह जो चीज़ कि खाई जाती है वह खुद गिज़ा नहीं होती बल्कि गिज़ा बनने की सलाहियत रखती है। यानी गिज़ा बिल कूव्वत(ताकत) जब गिज़ा बिलफैअल(ख़ून) बन जाती है तो जुज़वे बदन्(जिस्म का हिस्सा) इन्सान होती है। क्या जो चीज़ मैदे में जाये वह गिज़ा है? नहीं कोई शख़्स भी कंकरियों को जो किसी तरह से गल्ले वग़ैरह के साथ पक कर मैदे में पहुंच जाती है गिज़ा(खुराक)नहीं कहता। दवा जो इरादा करके पी जाती हैं गिज़ा नहीं कहलाती, पस मालूम हुआ कि मेहज़ मैदे में दाख़िल होने की वजह से कोई चीज़ गिज़ा के नाम से मोसूम होने (मशहूर, जाने जाने) की मुस्तहिक् नहीं होती बल्कि असल गिज़ा वह है जिससे बदन इन्सान का तग़ज़िया(परवरिश) हो और वह ख़ून है। पस साबित हुआ कि इन्सान की गिज़ा वही है जो रोज़े अव्वल से खुदा ने उस के लिए मुक़र्रर की है यानी ख़ून और ख़ून बतरकीब खास जम कर गोश्त बन जाता है लिहाज़ा यह बात साबित हुई कि गिज़ाए इन्सान गोश्त है।

मज़ीद तफसील : आप इसी बात को दूसरी तरह यूं समझ लिजिये कि इन्सान की गिज़ा गोश्त ही है, मगर कुदरत ने उस की आसानी के ख़याल से उस के जिस्म में एक ऐसी मशीन भी बना दी है जो गोश्त न मिलने की सूरत में दूसरी चीजों से गोश्त बना सकती है। इसी बिना पर अवाम को शुबा(शक) हो जाता है कि इन्सान की गिज़ा दूसरी चीजों से बनती है हालांकि जिस क़दर दूसरी चीजें वह पेट के मैदे में डालता है वह सब ख़ून बनने के बाद गिज़ा(खुराक) होती है।

स्वामी नित्यानन्द साहब के एतराज़ात

(1) बच्चा मादरे शिकम(मां के पेट) में दूध पीता है ख़ून नहीं पीता।

(2) मौलवी साहब आदमी की पैदाईश खून से बतलाते हैं आदम की पैदाईश मिट्टी से है कुरआन में मौजूद है।

(3) बग़ेर जीव(जानदार) मारे गोश्त मयस्सर(प्राप्त) नहीं हो सकता और जीव का मारना जुल्म है और ख़ुदा की चोरी।

योगेन्दर पाल के एतराज़

(4) मौलवी साहब के बयान से मालूम हुआ कि इन्सान की गिज़ा खून है और कुरआन में ख़ून का खाना हराम है।

डाक्टर परभूदयाल साहब के एतराज़

(5) कुदरती गिज़ा इन्सान की गोश्त नही है। गोश्त–ख़ोर के दाँत इस तरह के और ज़बान उस तरह की होती है वगैरह–वगैरह।

स्वामी नित्यानन्द के सवालों के जवाबातः

सवालः बच्चा मादरे शिकम(मां के पेट) मां के पेट में दूध पीता है ख़ून नही पीता।

जवाबः बच्चा शिकमे मादर में हरगिज़ दूध नही पीता यानी जनीन(भ्रुण) की गिज़ा हरगिज़ दूध नही होती। कोई डाक्टर हकीम या वैद्य इस अमर का क़ाइल नहीं आप किसी बच्चे की (वक़्त–ए–पैदाईश) नाफ जो उसकी गिज़ा का आला है काटकर मुलाहज़ा करलें कि उसमें से ख़ून निकलता है या दूध।

दुध पिस्तान में बनता है और बनने के बाद कहीं और जगह वापस नही जाता। ख़ून ही का दूध बनता है पिस्तान की ख़ासियत और बनीरश(बनावट) ख़ून को दूध बना देती है अगर ख़ून बिल फर्ज़ किसी दूसरी ज़र्फ (शरीर के दूसरे हिस्से) में चला भी जाये तो दूध इस ज़र्फ की ख़ासियत हासिल कर लेगा जैसा कि आम क़ायदा है।

दूध ऐसी गिज़ा है जिससे पाखाना बनता है अगर जनीन(भ्रुण) की गिज़ा दूध हुआ करती तो पाखाना की वजह से गर्भवती को सख़्त मुश्किल हो जाती।

दूध ज़िन्दा की गिज़ा है तीन माह तक जनीन(भ्रुण) मुर्दा होता है। दूध ऐसी गिज़ा है कि बग़ैर मैदे में दाखिल हुए हज़्म नही हो सकती और जनीन(भ्रुण) का मैदा काम ही नहीं करता और जो गिज़ा मैदे में जाकर हज़्म होगी उसमें

पाखाना लाज़मी तौर पर पैदा होगा। शिकम मादर(मां के पेट) में पाखाना का पैदा होना बिल्कुल मसलहत के खिलाफ है। पस यह कहना कि जनीन ख़ून से परवरिश नही पाता बल्कि दूध से पाता है हक़ीक़त के बिल्कुल ख़िलाफ है।

स्वामी नित्यानन्द साहब के दूसरे सवाल का जवाब

(सवाल 2) मौलवी साहब आदमी की पैदाईश खून से बतलाते हैं आदम की पैदाईश मिट्टी से है क़ुरआन में मौजूद है।

जवाब नम्बर 2

मैंने जो कुछ कहा उस को हाज़िरीन ने बखूबी समझ लिया और जो कुछ मेरा दावा था वह मैंने साबित कर दिया मगर अब आप आदम की पैदाईश का हाल भी सुन लो अल्लाह ताला फरमाता हैः

ولقد خلقنا الا نسان من سلا لة من طين ثم جعلنه نطفةً فی قرار مکین

अनुवादः''हमने मनुष्य को मिटटी के सत से बनाया'' (कुरआन 23:12)

(मुझे इत्तिफाक़न यह आयत याद आई) देखिये अल्लाह तआला ने यह नहीं कहा कि मैंने आदम को इस मिट्टी से बनाया है (ज़मीन की तरफ इशारा कर के) जिसका बना हुआ बताते हो देखो लफ्ज़े 'तीन' के माअना(अर्थ) मिट्टी के हैं उसके आगे लफ्ज़ 'सलालता' मौजूद है जिसके माअना(अर्थ) छने हुए और ख़ुलासे(सत) के हैं जिसका मतलब यह हुआ कि अल्लाह ताला ने अव्वल मिट्टी से नबात(वनस्पति) और नबात से हैवान(पशु–जन्तु) बनाया, बस इस तरह पर भी हमारा मतलब साबित हुआ और अगर आप इस बात के क़ाइल हैं कि आदम को इसी मिट्टी से पैदा किया तो फिर कोई झगड़ा ही न रहा हर चीज़ मिट्टी की हुई गोश्त भी मिट्टी का हुआ। दाल भी मिट्टी की और तरकारी भी मिट्टी की और आप और हम भी मिट्टी के हुए।

स्वामी नित्यानन्द साहब के तीसरे सवाल का जवाब

(सवाल 3) बग़ेर जीव(जान) मारे गोश्त हासिल नही हो सकता और जीव का मारना ज़ुल्म है और ख़ुदा की चोरी।

जवाब 3

मैं यह नहीं कहता कि आप जीव मारें मैं सिर्फ इस क़दर कहता हूँ कि गोश्त इन्सान की ग़िज़ा(खुराक) है और इन्सान पहले दिन से आखरी दम(सांस) तक गोश्त ही खाता है।

सवालः–वेद में इलाज करना आया है या नही? (ख़ाकसार बशीर)

योगेन्द्र पाल जी का tokc%&वेद में इलाज करना आया है।

सवालः–डाक्टर के क़ायदे के मुताबिक़ हर मर्ज़ कीड़ों से पैदा होता है (ख़ाकसार)

जवाबः–यह सही है (डाक्टर प्रभुदयाल साहब)

नतीजाः– आपकी समझ में आ गया होगा या मैं अर्ज़ करूं मर्ज़ का बाइस(कारण) कीड़े हुए और मर्ज़ का इलाज करना कीडों का मारना हुआ जो वेद (जो आप के अक़ीदे के मुताबिक़ आसमानी किताब है) से साबित है और वेद आसमानी किताब होने के लिहाज़ से ज़ुल्म की तालीम नही दे सकती । पस साबित हुआ कि जीव हत्या ज़ुल्म नही है

नोटः–सवालात के जवाबात तो वह खूशी से देते रह मगर जब नतीजा निकला तो बेचारे परेशान हो गये और यह कहने लगे ।

जवाब

ज़ालिम का मारना ज़ुल्म नहीं जैसे शेर, साँप का मारना (नित्यानन्द)

जवाबुल जवाब (जवाब का जवाब)

गाय और बकरी जो घास के साथ अकसर बारीक कीडे यानी नन्हे जानवर खा जाते हैं वह जानवर खुदा से फरियाद करते हैं कि तू उनसे हमारा बदला ले, तो ख़ुदाई फैसला गाय और बकरियों को गोश्तखोरों के सुपुर्द कर देता है वह उनको खा जाते हैं इस तरह पर गाय और बकरियों का खाना ज़ुल्म नही बल्कि एक इन्साफी फैसले पर है (ख़ाकसार)

योगेन्दर पाल के सवाल का जवाब

सवाल (4) मौलवी साहब के बयान से मालूम हुआ कि इन्सान की गिज़ा ख़ून है और क़ुरआन में ख़ून का खाना हराम है।

जवाब नम्बर 4

मैं पहले भी बयान कर चका हुं कि जमा हुआ ख़ून गोश्त होता है जो हराम नहीं है।

अब में ग़ैर जमे हुए ख़ून के मुताल्लिक़ अर्ज़ करता हुँ इसको ज़हर या कोई ख़राब चीज़ होने की वजह से खाने से नहीं रोका गया जैसा कि आपका ख़्याल है बल्कि एक मसलहत से मना किया गया वह मसलहत साफ है कि गोश्त खाने वाली क़ौम अगर ख़ून भी पीने लगेगी तो ग़ैर गोश्तखोर क़ौम पर इस क़दर ग़ालिब आजायेगी कि उसे नेसत व नाबूद कर देगी और चुंकि ग़ैर गोश्तख़ोर क़ौम से उस की ख़िदमत कराना है इसलिए बक़ा (आस्तित्व) की ज़रूरत भी।

इसके बाद स्वामी जी यह कह कर बग़ैर जवाब अदा किये उठ गये कि मुझे रेल के लिए स्टेशन जाना है।

डाक्टर प्रभूदयाल साहब के सवाल का जवाब

(5) कुदरती गिज़ा इन्सान की गोश्त नहीं है। गोश्त–ख़ोर के दाँत इस तरह के और ज़बान उस तरह की होती है वगेरा–वगेरा।

जवाब नम्बर 5

इस का जवाब दौराने तक़रीर में मुफस्सल आ चुका है यानी हर जानदार के मुताल्लिक ये साबित किया जा चुका है कि उसकी ग़िजा–खुराक खून है, मुबाहिसा खत्म हुआ। फकत

नोटः इस प्रभुदयाल जी के सवाल का अर्थात दाँतों **से मुताल्लिक भरपूर तफसीली जवाब आगे** ज़मीमे के **जवाब नम्बर 2 में पढें।**

ज़मीमा

जिस वक़्त में दो सम्मानित मेहमानों से मुखातिब था मेरे दोस्त डाक्टर प्रभुदयाल साहब ने आर्य मेहमानों की कमज़ोरी मेहसूस करके मुझे अपनी तरफ मुतवज्जे करना चाहा मगर मैंने उनको यह कह कर टाल दिया कि मैं इस वक़्त अपने मेहमानों से बाते कर रहा हुँ कल जिस क़दर वक़्त लेना चाहेंगे देने को हाज़िर हुँ दूसरे रोज़ हस्बे वायदा उनके सवालात के जवाबात लिख कर भिजवा दिये और वह भी अख़बार 'मुसलमान' अमृतसर में मुबाहिसे के साथ ही शाये हो गये। आगे वह सवालात और उनके जावाबात दर्ज किये जाते हैं।

प्रभुदयाल जी के सवालों के जवाब

प्रभुदयाल का पहला सवाल : चौपाये गोश्तख़ोर ज़बान चाट कर पानी पीते हैं और नबातखोर(पेड, पोघे, घांस खाने वाले) चुस्की से, इन्सान भी चुस्की से पानी पीता है। इसलिए गोश्तखोर नहीं हुआ।

डाक्टर बशीर साहब के उपरोक्त सवाल के 7 जवाब

(जवाब नम्बर 1–7) जबकि दीगर गोश्तखोर भी चुस्की से पानी पीते हैं जैसे चूहा, नेवला(मंगोस) तो इन्सान बिला शक गोश्तख़ोर हुआ (आपके जाल को आप ही के चूहों ने कुतर ड़ाला)

(जवाब नम्बर 2–7) नबातखोर मुंह लगाकर पानी पीते हैं और इन्सान चुल्लु से पानी उठा कर पीता है। लिहाज़ा नबातखोर(**'शाकाहारी**) न हुआ।

(जवाब नम्बर 3–7) पीने से खाने का ज़िक्र मुक़द्दम था जिस को आपने बिल्कुल तर्क कर दिया।

नोटः– अगर यह मज़हब इस अमर का क़ाइल है कि जो इन्सान इस जन्म में सज़ा के काम करता हैं। उस जन्म में सज़ा पाता है और सज़ा के तौर पर जानवरों का जन्म लेता है। इस क़ायदे से आर्यों को हम से गोश्तख़ोरी पर कोई मुखालफत न करना चाहिये।

(जवाब नम्बर 4–7) सुनिये! जिस क़दर नबातखोर(**शाकाहारी**) हैं वह मुंह से ही अपनी गिज़ा खाते हैं हाथ से मदद नही लेते मगर गोश्तखोर खाते वक़्त ज़रूर हाथ से मदद लेते हैं और गिज़ा चबा–चबा कर खाते है इन्सान गिज़ा खाने में (1)हाथ से भी मदद लेता है और (2) चबा–चबा कर भी खाता है गोया इन्सान खाने में गोश्तख़ोर से पूरा मुशाबह(मिलता) है।

बरअक्स इसके अगर थोडी देर के लिये यह तस्लीम करलें कि इन्सान चुस्की से पानी पीता है इसलिए वह नबातख़ोर(**शाकाहारी**) है तो भी मुशाबहत पूरी नही चुकि इन्सान पानी हाथ में लेकर पीता है। खुसूसन जबकि दीगर गोश्तखोर भी चुस्की से पानी पीने वाले मौजूद हों।

पस अगर इन्सान का गोश्तखोर होना ,खाने पीने पर आप के नज़दीक मुन्हसिर है तो इन्सान बिला–शक गोश्तखोर साबित हुआ।

(जवाब नम्बर 5–7) जब कि आप ने खाने पीने का ज़िक्र दलील में पेश किया हैं तो पाखाना का ज़िक्र भी ज़रूरी है, गोर से देखिये गोश्तख़ोर झुककर पाखाना करते हैं और इन्सान भी झुक–कर रफे हाजत करता है और नबातख़ोर खडे–खडे गोबर करते हैं लिहाज़ा इन्सान गोश्तखोर हुआ।

मुहलाहिजा फरमाइये के गोश्तखोर के पाखाने मे बदबू होती है और इन्सान के पाखाने मे भी बदबू होती है नबातखोर(**शाकाहारी**) के पाखाने मे बदबू नही होती। लिहाजा इन्सान गोश्तखोर हुआ।

नोटः– अगरचे यह एक मामूली बात मालूम होती है लेकिन अगर इसपर गौर किया जाये तो यह एक ऐसी बात है कि इस के मालूम होने के बाद कोई इन्सान को नबातखोर नहीं कह सकता डाक्टर साहब इस मसअले को खूब समझ लेंगे ।

(जवाब नम्बर 6–7)–गोश्तखोर मकान बना कर रहता है, नबातखोर बगेर

मकान बनाये रहते हैं यह मसला अज़हर मिनश–शम्स(सूरज से अधिक रौशन) है लिहाज़ा इन्सान चुंकि गोश्तखोर के मुशाबह(**जैसा**) है गोश्तखोर हुआ।

(जवाब नम्बर 7–7)–स्वामी नित्यानन्द ने मुझे कहा था कि इन्सान चोरी करता है दर–हक़ीक़त चोरी करना भी गोश्तखोरी का खास्सा हैं बिल्ली, कुत्ते, शेर आदमी सब इस काम में यकसाँ मुब्तला हैं लिहाज़ा इस ऐतबार से भी इन्सान गोश्तखोर हुआ।

आप को जो शुबा था जिसकी वजह से बेचारे इन्सान को जो शेर की हमसरी का दावा रखता है बल्कि हमेशा उस से बाज़ी ले जाता है एक बकरी के क़िस्म का तसव्वुर कर लिया था, दफा हो गया क्योंकि मैंने आपके एक दावे को सात तरह पर समझा दिया और हर एक का ऐसा जिन्दा सुबूत दिया कि जो रोज़ाना आपकी आँखों के सामने मौजूद है।

डाक्टर प्रभूदयाल साहब का दूसरा सवाल

गोश्तखोर के दाँत नुकीले होते हैं और जो गोश्त(मांस) नही खाते हैं उनके चपटे होते हैं मसलन गाय, भैंस आदि।

जवाबः

(1) आप के सवाल का तरीका बताता है कि इन्सान के नुकीले दाँत नहीं होते, यह कि उसके सिर्फ चपटे दाँत होतें हैं ताज्जुब है कि डाक्टर होकर तशरीह के ख़िलाफ कह रहे हैं इसका जवाब जो कुछ में दूंगा वह तो बाद को दूंगा अव्वल डाक्टरी और तिब्बी कुतब से मज़मून पेश करता हूँ जिस से नाज़रीन खुद ही फैसला कर लेंगे कि इन्सान के दाँत गोश्तखोरों जैसे हैं या नहीं।

अज़ रोये तिब्बे क़दीम (अर्थात पुरानी हिकमत की पुस्तकों से)

नामः सनाया,
शक्लः चोडे, तादादः 4 अदद–हर कतार में 2–2,
महले वुकू यानि कहां: दातों की हर कतार के दरमियानी हिस्से में वाक़े हैं,
ग़र्ज़ः चीजो के कुतरने और काटने की गर्ज़ से पैदा किये गये हैं।

नामः रूबाइयात,
शक्लः चोडे, तादादः 4 अदद–2 नीचे और 2 ऊपर की क़तार में,
मेहले वुकू यानि कहां: सनाया के एतराफ यानि बराबर में,
ग़र्ज़ः चीजो के कुतरने और काटने की गर्ज़ से पैदा किये गये हैं।

नामः अन्याब,
शक्लः मोटे नोकदार, तादादः 4 अदद 2 नीचे और 2 ऊपर की पंक्ति में,
मेहले वुकू यानि कहां: रूबाइयात के एतराफ यानि बराबर में,
ग़र्ज़ः सख़्त चीज़ों को तोडने के लिये

नामः तवाहन,
शक्लः चपटे, तादादः16 अदद 8 नीचे और 8 ऊपर की क़तार में,
मेहल्ले वुकू यानि कहां: अन्याब के एतराफ यानि बराबर में,
ग़र्ज़ः चीज़ों का पीसना उन का काम है

नामः नवाजिज़,
शक्लःचपटे, तादादः 4 अदद 2 नीचे और 2 ऊपर,,
मेहले वुकू यानि कहां: तवाहन के अतराफ में,
ग़र्ज़ः चीज़ों का पीसना उन का काम है

अज़ रूए तिब्बे जदीद (अर्थात आधुनिक चिकित्सा की पुस्तकों से)

दाँतों के नाम या किस्म मआनी तादाद गर्ज़

1. नामः इन्साइज़ टीथ,
सामने के दाँत, 8 अदद ,
चीज़ो के कतरने और काटने की ग़र्ज़ के लिए

2. नामः के नाइन टीथ,
कुचलियां, 4 अदद,
काटने की ग़र्ज़ के लिए

3. नामः कसपड टीथ,
अगली दाढ़ हैं, 8 अदद,
सख़्त चीज़ों के तोडने के लिए

4 नामः मोलर टीथ,
पिछली दाढ हैं, 12 अदद
सख़्त चीज़ों के तोडने के लिए।

क्या ऐसे दो सम्मानित गवाहों के बाद कोई कह सकता है कि इन्सान के नोकदार दाँत नही होते या सिर्फ चपटे होते हैं अगर आप मुहक़्क़ि(शोधकर्ता) हैं तो आईना लेकर खुद अपने दाँत मुलाहज़ा कर लिजिये अगर चार दाँत दो नीचे और दो ऊपर नोकदार हों तस्लीम कर लिजिये वरना दोबारा हम से दरयाफत फरमा लिजिये।

(2) और अगर इस सवाल नम्बर 2 से आप का यह मतलब हो कि चुंकि इन्सान के नोकदार दाँत मिस्ल गोश्तखोरों के नही हैं इसलिए वह गोश्त खाने का मुस्तहिक़ नही हो सकता। मैं अर्ज़ करूँगा कि जिन उसूल से वह छालिया और बादाम वग़ैरह के खाने का मुस्तहिक़ तस्लीम किया गया हैं उन्हीं उसूल से वह गोश्त खाने का मुस्तहिक़ समझा जायेगा क्योंकि वह अपने दाँतों से उन चीज़ों को भी नही तोड सकता है।

(3) क्या गोश्त को आपने ऐसा समझा है कि उसके खानेके लिये नोकदार दाँतों की ज़रूरत है?हरगिज़ नही बल्कि उसके खाने के लिये तो किसी क़िस्म के दाँतों की ज़रूरत नही बाज़, शिकरा, चील वगेरा उसके सबूत हैं।

(4) मैं आप की इस तहक़ीक़ को कि आपने यह महसूस किया कि गोश्तखोर के नोकदार दाँत होते हैं। निहायत क़दर की निगाह से देखता हुँ मगर साथ ही शिकायत असल अमर की है कि आपने यह न सोचा कि यह नोकदार दाँत उस को क़ुदरत ने किस ग़र्ज़ से दिये हैं। क्या आप ने यह समझा है कि यह नोकदार दाँत उस को गोश्त खाने के लिये दिये गये हैं। नही बल्कि शिकार की गिरिफ्त और हड्डी तोडने के लिये दिये गये हैं और यह एक मुशाहदे अर्थात तजुर्बे की बात है। इस से आप इन्कार नहीं कर सकते ।

(यह है हड्डी तोड जवाब)

आप इन फुज़ूलियात में वक़्त खराब ना कीजिये अगर आपकी मजहबी किताबों में गोश्त की ना मौजूद है तो खाइये या न खाइये मगर खाने वालों से झगडा न फरमाइये आप की मज़हबी पुस्तकों में तो जायज़ लिखा है।

(5) मुलाहज़ा किजिये कि आप ने इन्सान को नबातखोर(**शाकाहारी**)) साबित करने के लिये जो तफसील पेश की है वह कैसी बे–उसूल और आ़रज़ी हैं कि असल पैदाईश से उसको कोई ताल्लुक़ ही नही यानी दाँत इन्सान को न पैदाईश से होते हैं और न आख़िर वक़्त तक रहते हैं बल्कि दरमियान में भी जब चाहे उनको अलेहदा कर सकते हैं और उनकी जगह दूसरे लगा सकते हैं जो इन हड्डियों को अपने मुंह के अन्दर रखना चाहें वह पत्थर के लगवा सकता हैं (क्या आप इन्हीं दाँतों पर नाज़ाँ थे) इन्सान के वह दो ज़माने जिन में यह पोपला बग़ैर दाँत के होता है आप उसको नबातखोर(**शाकाहारी**) कहेंगे या गोश्तखोर। आपके क़ायदे से उन वक्तों में न नबातखोर कहला सकता है। और न गोश्तखोर, फिर क्या उस वक़्त उसको जमादखोर(**पहाड, पत्थर खाने वाला**) कहना चाहिये क्योंकि दुनिया में यही तीन चीज़ें हैं हैवानात, नबातात, जमादात यह है आप के सवाल की तरदीद और उस का दन्दाँ–शिकन जवाब ।

(6) ज़ाहिर हैं जिस वक़्त इन्सान पैदा होता है उस वक़्त उसके दाँत नही होते उस वक़्त उसकी क्या गिज़ा(**खुराक**) होती है? क्या यही घास–फूंस नबात वह खाता है? उसके खाने के लिये क़ुदरत ने दूध पैदा किया है और उस दूध में एक इशारा छुपा है जिनको एहले ज़मीर समझते हैं। सूनो ! क़ुदरत ने जो उसकी गिज़ा शुरू में दूध मुक़र्रर की है। यह हैवानी गिज़ा है नबाती(**शाकाहारी**) या जमादी(**पहाड, पत्थर**) गिज़ा नही हैं जो इस अमर की दलील है कि उसकी गिज़ा हैवानी(**पशुओं की**) मुक़र्रर की गई है। क़ुदरत को जिस ज़ीने पर चढ़ाना मन्ज़ूर था उसकी पहली सीढी पर चढा दिया। पस जो उस इशार–ए–क़ुदरत को न समझे वह घास–फूंस कुछ ही खाता रहे क़ुदरत का उसमें कोई क़ुसूर नही।

ऐतराज़(ख़ाकसार बशीर)

तो क्या दूसरी खाने की चीजें बिल्कुल हराम हैं नहीं उनको भी तन्कुल किजिये मगर खाइए इसी को, यानी बतौर असल ग़िजा गोश्त हो और बतोर तफरीह तबा व परहेज़ दूसरी चीजें।

वसअत(**तफसील से**)

अगर गोर किया जाये तो कुल हेवानात(**जीव–जन्तुओं**) की इब्तिदाई गिज़ा–खुराक हेवानी गिज़ा(**जीव–जन्तुओं वायh**) पाई जाती है। इब्तिदाई ज़माने से ख्वाह वह ज़माना लिया जाय जब कि वह अण्डे या रहम में जानदार का ख़िताब पा लेता है या इस ज़मीन पर आने का इब्तिदाई ज़माना लिया जाये।

अब में यहाँ पर चंद ऐसी मिसालें पेश करता हूँ जो हक़ीक़तन तो मुवाफिक़ हैं मगर खिलाफ मालूम होती हैं यानी चंद ऐसे जानवर हैं जो पैदा होते ही दाने चुगते नज़र आते हैं मगर गोर करने से यह राज़ खुल जाता है। चुनांचे

कबूतर का बच्चा

उस के मुतअल्लिक़ भी यही ख्याल किया जाता हैं मगर उसकी हक़ीक़त यह है कि तीन रोज़ तक कबूतर अपने बच्चे को कुछ नहीं चुगाता सिर्फ अपनी खाली चोंच उस के मुंह में डाल कर निकाल लेता है। जिसको हवा खिलाना कहते हैं। यह वह हाल से खाली नही हैं या वाक़ई कुछ नही खिलाता या थोडी बहुत अपने मुंह की रतूबत उसे चटा देता है उस दूसरी सूरत में तो कोई ऐतराज़ ही नही पहली सूरत के मुतअल्लिक़ तिब्बी मसअले हैं कि जब हेवान को कोई गिज़ा नही मिलती तो उसके जिस्म की वह रतुबत जो बतौर ज़खीरे

के मौजूद होती है गिज़ा का काम देती है। पस जिन ज़माने में कबूतर अपने बच्चे को फाक़े (भूका, व्रत) कराता है वह रतुबत उसकी गिज़ा बनती है और उस फाक़ह से कबूतर की ग़र्ज़ भी यही होती है कि वह ज़ख़ीरे शुदा रतुबत उसके जिस्म में फना हो, हमेशा उडने के काम दे (जो रोज़ा नही रखते उन को कबूतर जितनी भी अक़ल नही हैं) मालूम होता है कि यह रतुबत उस के जिस्म में इस कसरत से होती हैं कि तीन दिन के फाक़े (भूका, व्रत) का बोझ उस पर ज़्यादा नहीं होता (एक अजीब इन्किशाफ फालिज का सबब भी यही अधिक रतुबत(राल) होती है और इस मर्ज़ में फाक़ा सब सब बहतरीन इलाज तस्लीम किया गया है और कबूतर का गोश्त और उसका ख़ून भी मुफीद है। शायद उसका सबब यही फाक़ा हो पस में कहुँगा इन्सान को भी चाहिये कि वह अपने बच्चे को जहाँ तक मुमकिन हो इब्तिदा में फाक़ा कराया करें। पस अगर हमसे सवाल किया जाये कि कबूतर का बच्चा तीन दिन तक क्या खाता है तो हम जवाब देंगे कि हेवानी ग़िज़ा जो कि उसके जिस्म में बतौर ज़ख़ीरा मौजूद थी। उन तीन दिन के बाद कबूतर चुगाना शुरू करता है जिसमें बडा हिस्सा हेवानी गिज़ा का होता है यानी जो दाना वह अपने पेट से उगल कर चुगाता है उसमें उसकी मुन्हज़्म रतूबत(हजम करने वाली राल) भी शरीक होती है। पस मालूम हुआ कि पहली गिज़ा जब वह अण्डे के अंदर था बिल्कुल हेवानी(**जीव–जन्तुओं वाली**) थी और जब वह ज़मीन पर आया जिन में उसको फाक़ा करना पडा वह भी हेवानी थी और तीन रोज़ के बाद की गिज़ा जो दाने की शकल में दी गई है वह भी मुरक्कब हेवानी गिज़ा(जीव–जन्तुओं की खुराक) है।

कौआ

अपने बच्चे को ज़्यादा अर्से तक कोई गिज़ा नही देता इस खयाल से कि वह उसको अपना बच्चा नही ख्याल करता मगर क्या खालिक़े हक़ीक़ी राज़िक़े बरहक किसी से बेख़बर है हरगिज़ नहीं। वह उनके लिये उनके हज्म के मुवाफिक़ उन्हीं के घोंसले में नन्ही–नन्ही मख़लूक़ यानी मच्छर पैदा कर देता है और जब वह भूख से बेताब हो कर चींखता है और ऊपर को ज़ोर से सांस लेता है यह मच्छर उसके हलक़ के रास्ते से उस के मैदे में दाख़िल हो जाते हैं और गिज़ा का काम देते हैं। खुदा यूँ करता हैं उन बे–परों की परवरिश देखा आप ने, खुदा की रज़्ज़ाक़ी अर्थात रिज्क देने को और परिंदों की हेवानी खुराक (जीव–जन्तुओं की खुराक) को।

मुर्ग़ का बच्चा

यह जंगल में तो मिसल अपने हम–जिन्सों तीतर, बुटेर, कौआ आदि की

तरह पैदा होने के बाद नन्हे कीडों पर बसर करता है अलबत्ता हमारे घरों में कीडे उस को नहीं मिलते इसलिए मजबूरन मुर्गी दाना चुगाती है मगर इब्तिदाई पैदाइश की खुराक उसकी वही हेवानी गिज़ा(जीव–जन्तुओं की खुराक) है जो उसको अण्डे के अंदर मिलती है नीज़ इस आलम मजबूरी में जिन दानों को यह चुगता है अव्वल मुर्ग़ी उस दाने को लेकर अपनी दहन की रतूबत(मुंह की राल) से उसे तर कर देती है इसके बाद वह बच्चा उसको चुग लेता है। गोया उस वक़्त भी वह गिज़ा हेवानी मुरक्कब होती है मगर ऐसी बारीकियाँ दाना समझ सकते हैं और जो लोग ऐसे उमूर के सोचने के आदी नही हैं वह बगेर समझाये नहीं समझ सकते।

नतीजा

आम तौर पर परिन्दे कीडे खाते हैं या शिकार मार कर बसर करते हैं कुछ परिन्दे जिनकी ज़ाहिरी हालत से शुबा हो सकता था उनका तजकरा कर दिया गया लिहाज़ा यह बात बख़ूबी रौशन हुई कि हर परिंदे की इब्तिदाई गिज़ा भी हेवानी गिजा(जीव–जन्तुओं की खुराक) है जो एक इशारा है उनके लिये हेवानी गिज़ा मुक़र्रर होने का कुदरत से।

हशरातुल अर्ज़(**जमीनी जीव–जन्तु**)

ज़्यादा–तर उन की पैदाईश अण्डे से है जिसका बयान हो चुका कुछ बच्चा देकर दूध पिलाते हैं उनका बयान भी गुज़रा कुछ ऐसे हैं जो बच्चा देते हैं मगर उसको दूध नही पिलाते, जैसे बिच्छू उसका बच्चा पैदा होते ही अपना ठिकाना अपनी माँ की पीठ पर बना लेता है और उसी को चाट कर एक हफ्ता गुज़ारता है, इसके बाद नीचे उतरता है। उसकी माँ अपने लुआबे दहन(मुंह की राल) से मिट्टी तर कर के देती है यह उसको चाटता है। यह गिज़ा उसको ब–नज़र एहतियात खिलाई जाती है वरना बिच्छू नन्हीं–नन्हीं मख़्लूक़(कीडे आदि) पर गुज़र करने वाला है।

ज़ाती तजुर्बा

मादा बिच्छु एक माह से ज़्यादे अर्से तक गर्भवती रहती है, बच्चे क़रीब तीस चालिस देती है। पैदा होते ही यह अपनी माँ के जिस्म पर सवार हो जाते हैं और रात दिन पुश्त(पीठ) पर चिम्टे हुए रहते हैं, माँ अपना लुआब डंक इनके

ऊपर बग़र्ज़ हिफाज़त किये हुए रहती है और इस तरह तैयार रहती है कि ख़तरा महसूस होते ही चल दे और उसके बच्चे भी ऐसे होशियार रहते हैं कि चलने के वक़्त उनको किसी इशारे की ज़रूरत नही होती ग़ालिबन ख़तरे के डर से वह उनको किसी वक़्त पुश्त से जुदा नहीं करती। बिच्छू के बारे में जो यह बयान किया जाता है कि बच्चा उसके पेट को चीरके निकलता है और एक बच्चा पैदा होने के बाद माँ मर जाती है यह सही नही है। मैंने मादा को एक माह तक जिन्दा देखा उस के बाद वह किसी बे–एहतियाती की वजह से मौत का शिकार हो गई।

दरियायी जानवर

सिवाये व्हेल मछली के सब अण्डे देते हैं व्हेल दूध पिलाती हैं सो उनका तज़किरा पूरे तौर पर गुज़र चुका और साबित हो चुका कि उन सब की इब्तिदाई गिज़ा हेवानी गिज़ा(जीव–जन्तुओं की खुराक) है और दरियायी मछलियों को सिवाये दूसरी मछिलयों के कोई और गिज़ा मिल भी नही सकती।

रिज़ल्ट

लिजिये साहब मुशाहिदे ने तो यह साबित कर दिया कि इब्तिदाई गिज़ा इन्सान की बल्कि जुमला हेवानात की हेवानी(जीव–जन्तुओं वाली) हैं चाहे वह दरिन्दा हों या परिन्दा हो। चरिंदे हों या खज़िंदे हों। बररी(जमीन पर रहने वाले जीव) हों या बहरी(समुद्री जीव) हों जबकि वह अपनी असल फितरत पर होता है और कोई चीज़ दुनिया की उसने खानी सीखी हो ।

मुशाहिदाः– तो पुकार–पुकार कह रहा है किः

हेवान हेवान की गिज़ा है। नबात नबात की गिज़ा है।।

हेवान(जीव–जन्तुओं) की असल ग़िज़ा हेवान(जीव प्राणी) हैं। सिखलाने से दूसरी गिज़ा खाना सीख जाता हैं। हेवानों(जीव–जन्तुओं) में कोई ऐसा हेवान(जीव–जन्तु) नज़र नहीं आता जो दूसरे हेवान(जीव–जन्तुओं) की खुराक न हो। यह बात दूसरी है कि कुछ हेवान(जीव–जन्तुओं) अपनी होशयारी से अपनी ज़िंदगी तक खुद को दूसरे का लुक़्मा न होने दे मगर दूसरा उसको लुक़्मा करने की फिकर में ज़रूर हैं और बाद मरने के तो ज़रूर दूसरों की गिज़ा का लुक़्मा(भोजन) हो जाता है, जिस तरह इन्सान को चींटी और शेर को गिद्ध खा जाते हैं और इसी तरह तमाम हेवानात(जानवरों,परिन्दों आदि) का हाल है।

सुनिये! और गोर से सुनिये कि एक छोटा–सा जानवर जिसका जिस्म

कुत्ते से बडा नहीं होता। हाथी को अपना शिकार बनाता है वह एक ही जस्त में हाथी की पुश्त पर सवार हो जाता है और उसका दिमाग़ निकाल कर खा जाता है और हाथी जैसा फील तन मुरदा होकर लोमडी, गिद्ध और चींटी की गिज़ा(खुराक) बन जाती है मुलाहिजा फरमाया आपने कि हाथी और चींटी की खुराक हो? अगर यह फितरत का तकाजा अर्थात मांग नही तो और क्या है यह एहले अक़्ल को बहुत बडा इशारा है।

हाँ और सुनिय और हेवान (जानवर, परिन्दे आदि) ज़्यादातर इन्सान की गिज़ा(खुराक) हैं मगर उनमें से हिन्दू क़ौम ने ज़्यादा वह हिस्सा अपने लिये जायज़ कर रखा है, मुसलमान बेचारे चंद किस्म(तरह) के हेवान ख़रीद कर खा लेते हैं। और हमारे हिन्दू भाई उस ख़रीदारी के फायदे में सहीम(हिस्सेदार) बन जाते हैं मगर हिन्दू क़ौम जिस क़दर हेवान हैं उन में से एक भी नही छोडते। सुअर, सांड, साँप, शै, शिग़ाल गैंण्डा, कुत्ता, बिल्ली, गर्ज़ कि जिस क़दर मुफत और मुर्दार और नापाक, सडे सडाये जानवर हैं सबको हडप कर जाते हैं और कभी ज़रूरत हो तो ख़रीदने से भी दरेग़(लापरवाही) नही करते ।

अगर हिन्दू धर्म की किताबों के हवाले उसके संबन्ध में दरकार हों तो आख़िरी बाब(उर्दू वाले एडिशन) में मुलाहज़ा फरमा लें। कहिये जनाब खिताब सही है या नहीं अगर उन चीज़ों के खाने वाले हिन्दू क़ौम के नही हैं तो इस अमर का आप ऐलान कर दें ताकि हम उनको हिन्दू न कहें बल्कि हम भी आप की तरफ से इस बारे में कोशिश करें कि यह नापाक क़ौमें खारिज कर दी जायें। उम्मीद है कि आप कामयाब होंगे ज़रूर कोशिश फरमायें।

अच्छा याद आया एक ऐसा भी जानवर है जिसको आप की क़ौम नहीं खाती जिसकी वजह यह है कि उसको खालिक़ ने अपने खास बंदों के लिये रिज़वर्ड–मखसूस कर दिया है। [गाय की ओर इशारा है]

क़िस्मत क्या हर एक को क़स्साम अज़ल ने
जो शख्स जिस चीज़ के क़ाबिल नज़र आया
मुर्दार किसी को, तो ख़िांज़ीर(सुअर) किसी को
लहम हम को दिया जो अत्यब(बहुत खूब) नज़र आता

तक़दीरे अमर का किसी को चारा नही तो हम दुआ करेंगे।

डाक्टर प्रभूदयाल साहब का तीसरा सवाल

गोश्तखोर दिन में कम देखते हैं और रात में ज़्यादा, नबात(**सब्जी–घास**) खाने वाले दिन में ज़्यादा और रात में कम इस से मालूम होता है कि इन्सान गोश्तखोर नहीं है।

बशीर साहब का जवाब

हरगिज़ ऐसा नहीं है चील, कौआ बाज़, शिकरा(लंबी चोंच से मछली का शिकार करने वाला) वगेरा सब गोश्तखोर हैं। मगर मुत्लक़ रात में नही देख सकते बरअक्स इसके दिन में मीलों के फासले से अच्छी तरह से देख सकते हैं।

गोश्तखोर चोपाये भी रात में हम से ज़्यादा हरगिज़ नहीं देख सकते इस काम में बलिहाज़ फितरत वह हमसे किसी तरह तफ्व्वुक(**बढोतरी, बरतरी**) नही रखते। किसी का रात को कम देखना और किसी का दिन में कम दिखना यह सिर्फ अभ्यास से ताल्लुक़ रखता है, इन्सान ने ब–वजह आराम के रात को काम करना छोड रखा है और चौपायें ब–वजह दरिन्दों के खौफ के रात को नही चलते फिरते और इसी तरह दरिंदे इन्सान के खौफ से दिन को नही निकलते। तीतर इस वजह से दिन को नही बरआमद होते कि दूसरे जानवरों पर उनको छापा मारने का मौक़ा कम है। ग़र्ज़ जो रात में किसी काम में मशगूल रहता है वह रात में बखूबी देख सकता है और जो दिन में कारोबार करने का आदी है वह दिन में फितरत को उस से कोई ताल्लुक़ नहीं है। चुनांचे बिल्ली बखूबी देख सकती है और चोर रात को अन्धेरे में सब–कुछ करता है। इन्सानों में बहुत–से ऐसे इन्सान हैं जिनको ऐनक की आदत हो गयी है। वह बग़ैर ऐनक के कुछ नही देख सकते। ग़र्ज़ कि आदत और चीज़ है। और फितरत और आदत को फितरत समझना सख़्त ग़लती हैं। यह कहना कि गोश्तखोर रात में ज़्यादा देख सकता है उस वक़्त तक क़ाबिले तस्लीम नहीं जब तक कोई गोश्तखोर इन्सानी जन्म लेकर गवाही न दे। बशर्तेकि उसको भी याद हो कि वह अगले जन्म में फुलाँ किसम का गोश्तखोर था। आपने अपने दावे के सुबूत मे कोई दलील पेश नही की आइये हम आपको एक बात बतलाते हैं जो एक रौशन दलील मालूम होती है यानी गोश्तखोर की आँख का रात में चमकना नज़र आना और रात ही में शिकार करना। चुंकि वह दूसरे के माल पर छापा मारता हैं इसलिए रात को शिकार करता है इन्सान की भी यही हालत है वह भी रात में चोरी करता है आँखों का चमकना उसके गोश्तखोर होने की दलील नही बल्कि साफ उस के हड्डी खाने की दलील हैं क्योंकि उसकी आँखों की यह चमक हड्डी खाने की वजह से पैदा होती हैं हड्डी में मादाये फासफोरस होता है। जिसका यह खास्सा है कि वह रौशन होता है और हवा से जलने लगता है और हड्डी में निकलता है।

VC में अंधेरे में देखने के तरीक़े बयान करता हुँ ताकि इस काम के साथ

हज़रत का शुबा निकल जाये। चंद रोज़ रोशनी देखना छोड दें। न सूरज की रोशनी देखें और न चिराग़ की बस बाद कुछ दिन के अंधेरे में देखने की मशक़ हो जायेगी। इसी तरह बिला मश्क़ अगर लेट कर देखा जाये खुसूसन मैदान में रात के वक़्त तो बराबर दूर तक का नज़र आयेगा मिस्ल उन गोश्तखोरो के जो शिकार करते हैं। 'ज'हर' एक बीमारी है जिसमें बनिस्बत रोशनी के अंधेरे में ज़्यादा दिखलाई देता है और उसके असबाब ज़्यादा तर यही हैं कि चंद रोज़ अन्धेरे में रहने का इत्तिफाक़ हुआ हो और रोशनी न दिखा हो। शिकार करने वाले जानवर अक्सर इसी तरह अंधेरे में रहते हैं तो अगर उन को भी यह बात हासिल हो कि वह रात में बनिस्बत दिन के ज़्यादा देख सकते हैं तो मुमकिन है ....यह फितरत नही बीमारी है। गर्ज़ कि इन्सान इस बारे में बलिहाज़ फितरत उनसे जुदा नही हैं आँखों का गुस्से की हालत में चमकना इस अमर की दलील नही है कि रात में उन्हें ज़्यादा दिखलाई देता है। मैं इस के जवाब में आपका ज़्यादा वक़्त लेना नहीं चाहता जबकि यह बात ज़ाहिर है कि तमाम सब्ज़ीखोर एक दूसरे से मुशाबहत नही रखते कोई सींघ रखता है कोई नही। कोई जुगाल करता है कोई नही करता। बावजूद इनमें इस क़दर इख़्तलाफ होने के सबको सब्ज़ीखोर कहा जाता है। पस अगर गुस्से की हालत में या खास हालत में अगर इन्सान अपनी आँख न चमका सकता हो और जुमला गोश्तखोरो के मुताल्लिक़ भी यह इल्म न हो कि वह अपनी आँख चमका सकते हैं। तो इस बे–दुम अर्थात बगेर पूंछ को गोश्तखोर न कहना सख्त ताज्जुब की बात होगी। खुलासा यह है अगर उस की आँख न भी चमके तो भी उस का नाम गोश्तखोरों की फहरिस्त से हरगिज़ खारिज नही किया जा सकता। शिकार मारने की बिना पर गोश्तखोर को ज़्यादा देखने वाला क्यों कहते हो, रात में जिस क़दर काम वह कर सकते हैं हम भी सब काम कर सकते हैं। रात में वह चलते–फिरते हैं इन्सान भी चल फिर सकता है, वह रात में अपने से छोटे जानवर को खा जाते हैं। इन्सान भी अपने से बाराबर वाले का काम तमाम कर देता है।

शेर जो सबसे बडा गोश्तखोर है उसके शिकार पर गौर कीजिये आफताब गुरूब(शाम, दिन छिपने के समय) होने के करीब जो रात नहीं कहलाती........बाहर निकल कर किसी ऊँचे पहाड पर बैठ जाता है और वहाँ से चारों तरफ निगाह करता है। क्यूंकि वह वक़्त चोपायों(पशुओं) के मकान(ठिकाने पर) जाने का होता है। बस उनमें से जिनका वह शिकार करना चाहता है, उसी वक़्त से वह उसकी ताक में हो लेता है और जब मौक़ा पाता है पकड–कर चट

कर जाता है। इस सूरत में कोई बात उनकी तेज़ी बसारत(दृष्टि) की नहीं पाई गई और न रात में किसी किस्म का देखना ज़ाहिर हुआ।

अलबत्ता जिस क़दर कुव्वत(ताक़त) से यह गोश्तखोर काम लेते हैं इन्सान उस क़दर अपनी कुव्वते शामा(सूंघने की ताकत) से नही ले सकता मगर दूसरे किसम के हेवान अपनी इस कुव्वत से बहुत कुछ काम ले सकते हैं। चींटी इस ताक़त के ज़रिये संदूक़ के अन्दर की चीज़ मालूम कर लेती है, सब्ज़ीखोर जिनमें से ऊँट सब से ज़्यादा यह कुव्वत रखता है मीलों से सूंघ कर पानी का पता लगा लेता है। घोडा जब किसी पानी के अन्दर घुसता है तो सूंघ कर उसकी गहराई मालूम कर लेता है।

हमारा एक तजुरबा है जिससे साबित होता है गोश्त खाने से इन्सान की कुव्वते बासिरा(देखने, दृष्टि की ताक़त) कुछ बढी हुई है। अगर अन्धेरे में आप किसी कुत्ते या बिल्ली को एक लुक़्मा डालें तो वह उसे नाक से सूंघ कर तलाश करेगा मगर आप नज़र से उसको देख लेंगे बशर्तेकि ज़्यादा अंधेरा न हो यह साफ दलील इस अमर की है कि इन्सान उन जानवरों से कुछ ज़्यादा देखता है। और जो यह गोश्तखोर जानवर रात में कुव्वत शामा(सूंघने की ताकत) ही से काम लेते हों। पस आपका यह खयाल बिल्कुल ग़लत निकला कि इन्सान यह गोश्तखोर रात में ज़्यादा देख सकते हैं और आपका यह दावा भी बिल्कुल ग़लत है कि गोश्तखोर दिन के वक़्त हमसे कम देखते हैं गालिबन आपने शिकारी कुत्ते और शिकारी चीते देखें होंगे यह मीलों के फासले से हिरन आदि को देख लेते हैं जिनको हम दूरबीन से देखकर उन्हें पकडने का इशारा करते हैं लिहाज़ा यह दावा भी आप का बातिल हुआ।

डाक्टर प्रभूदयाल साहब का चौथा सवाल

गोश्तखोरों से नबात यानि सब्ज़ा खाने वाले बहुत डरते हैं और उनके पास नहीं जाते मगर इन्सान के पास सब आते हैं लेकिन इन्सान धोके से मार डालता है।

जवाब नम्बर 4

चलिये इस बात पर हमारा आपका फेसला आप अपने सुबूत को साबित किजिये कि अगर आपका पेशकरदा सुबूत सही न हो तो आप का दावा हमारा सुबूत हो जायेगा। आप किसी एक सब्ज़ीखोर को जो अपने असली वतन जंगल

में हो आपका खानाज़ाद और आपका परवरदा यानि पाला हुआ या क़ैदी न हो उसको अपने पास बुला तो लिजिये कम से कम आप उसके पास तो चले जाइये अगर आप उसके पास तक चले गये और वह न भागा तो आपका दावा सही और अगर वह भाग गया तो समझा जायेगा कि वह डरता है और इस बिना पर आपको यह तस्लीम करना पडेगा कि आप गोश्तखोर हैं क्योंकि आपने यही दावा किया है कि नबातखोर,(घास,सब्जी खाने वाले) गोश्तखोर के पास नहीं जाते डरते हैं, मैं तो इस बात का भी यक़ीन नहीं कर सकता कि आपके घर का पला हुआ भी कोई जानवर जिस को जंगल में कुछ ज़माने से छोड दिया हो आपके बुलाने से आपके पास चला आये या आप उसके पास चले जायें और वह न भागे। उन पले हुए जानवरों की मिसाल क़ैदी की सी है जो रोज़ अपना काम करके वापस आ जाता हैं, इस खौफ से कि अगर भाग भी गया तो दौबारा क़ैद के अलावा सख़्त सज़ा भी दी जायेगी ।

अगर सब्ज़ी यानि घांस, हरा चारा आदि खाने वालों का इन्सान के पास चले आना इस अमर की दलील समझी जाती है कि इन्सान सब्ज़ीखोर है तो इन्सान के पास गोश्त खाने वालों का चले आना इस बात की दलील होना चाहिये कि इन्सान गोश्तखोर है और यह बात दिन की रौशनी की तरह है कि रात दिन गोश्तखोर कुत्ता, बिल्ली वगेरा इन्सान के पीछे–पीछे फिरते हैं। बगैर पाले हुए घरों के नज़दीक रहते हैं रात को जंगली गोश्तखोर बस्तियों के इर्द गिर्द चक्कर लगाते हैं बरअक्स इसके एक भी सब्ज़ीखोर इन्सान के पास बगैर पाला हुआ नहीं आता और न वह बगैर पाला हुआ हमारे शहर में रहता है(हिरन जंगली गाय, बारह सिंग्गा वगैरह) और न इर्द–गिर्द चक्कर लगाता है और ना बस्तियों में आकर घर बनाता है। जनाब जो उसूल आपने इन्सान के नबातखोर होने के लिये बयान किया था। उससे इन्सान नबातखोर(घास,सब्जी खाने वाले) साबित न हुआ बल्कि गोश्तखोर साबित हो गया, यही है सच्चाई की दलील।

डाक्टर प्रभूदयाल साहब का पांचवां सवाल

गोश्त खाने वाले गोया गोश्त का पेवंद अपने ऊपर चढाते हैं तो उनमें हेवानियत का असर आ जाता है इसलिए गोश्त न खाना चाहिये।

जवाब नम्बर 5

यह आपने खूब ही कहा। आप के सवाल का पहला हिस्सा यानी यह कि इन्सान गोश्त का पेवंद अपने ऊपर चढाता है बिल्कुल सही है। इन्साफ कीजिये कि मिस्ल का मिस्ल के साथ पेवंद लगाना मुनासिब है या गेर–मिस्ल का पेवंद

सही है (जिस तरह का कपडा होता है उसी किसम या उसी तरह के कपडे का पेवंद लगाना पसंद किया जाता है) मगर यह बात गोश्त खाने से हासिल होती है लिहाज़ा गोश्त ही खाना चाहिये दुसरा हिस्सा इस सवाल का अजीब है मालूम नही कि हेवान के आपने क्या अर्थ समझे हैं। हेवान सब ही हैं हेवानियत कोई ऐब की बात नही हेवान के माना हैं जिंदा शय(वस्तु) के कि हर इन्सान हेवान हो सकता है फिर यह क्या कहा कि हेवानियत का असर गोश्त खाने वालों में गाय, बकरी की तरह घास–पात चरने की आदत हो जाती है। यह कौनसी हेवानियत है जो इनके गोश्त के साथ गोश्त खाने वालों में असर कर जाती है, क्या गोश्त खाने वालों के सींघ निकल आते हैं या दुम पैदा हो जाती है या परिंदे का गोश्त खा कर उडने लगते हैं अगर आपके नज़दीक यह बात साबित है कि गोश्त में आदत का असर शामिल होता है तो सब्ज़ी खाने वाले इन्सान भी गोश्तखोर होंगे। और यह सब्ज़ीखोरी का असर उन सब्ज़ीखोर हेवानों के गोश्त खाने से आया होगा। बस आप हमको सब्ज़ीखोर होने के लिये खूब गोश्त खिलाइये ताकि हम में जल्द यह असर न आ जाये और हम भी आप के से सब्ज़ीखोर हो जायें अगर आपका दावा और दलील सही है तो आईदा से आप बजाये गोश्तखोरी के रोकने के गोश्त खाने की प्रेरणा देंगे मगर ऐसा नही है अगर ऐसा होता तो शेर जो सब्ज़ीखोर जानवरों पर बसर करता है आज चराहगाह में घास चरता नज़र आता आप के तर्ज़े सवाल से यह समझा जाता है कि हेवानियत कोई खराब शय या बात है मगर हम पर उस का कोई बुरा असर नही हो सकता क्योंकि हम हेवानखोर नही बल्कि गोश्तखोर हैं जो बेजान चीज़ है। हम जिन्दा हेवान का गोश्त काटकर अगर खाते तो हेवानियत का शुबा आप कर सकते थे। हाँ जो लोग दूध घी खाते हैं जो कि उनकी जिन्दगी में उनसे निकाला जाता है उन पर हेवानियत का शुबा हो सकता है। मैं इल्ज़ाम उनको देता था क़ुसूर अपना निकल आया। जिस बिना पर आप गोश्त को नाजायज़ बतलाने की कोशिश करते थे उसी दलील से उसका खाना जायज़ बल्कि ज़रूर साबित हुआ।

डाक्टर प्रभूदयाल साहब का छटा सवाल

गोश्त खाने वाले हमबिस्तरी(सेक्स) के वक़्त जुड जाते हैं और नबातखाने वाले(घास,सब्जी खाने वाले) अलग रहते हैं और इन्सान भी अलग रहता है इसलिए मालूम होता है कि इन्सान गोश्तखोर नही है, जवाब में गिलहरी पेश न हो।

जवाब नम्बर 6

ऐसा मालूम होता है कि यह पुराना सवाल कहीं और जगह भी पेश हुआ है और इस के जवाब में गिलेहरी का नाम लिया गया होगा। इसलिए आपने पेशबंदी कर दी यह खुद ही शिकस्त है और उस गिलेहरी का नाम न पेश करने से यह बात साबित हो रही है कि इस अमर बात के क़ाबिल नहीं कि एक जानवर ऐसा है कि वह सब्ज़ीखोर है और जुफ्ती(सेक्स) के वक़्त जुड जाता है। गौया खुद ही आपने इस सवाल का जवाब दे दिया है। आप मुतमईन रहिये कि हम गिलेहरी पेश न करेंगे मानुष के जवाब में गेर–मानुष को पेश न करेंगे। जैसा कि आपने इस सवाल में इन्सान को महज़ एक काम में कुत्ते–बिल्ली के जैसा न होने के कारण गोश्त खने वालों से जुदा रखने की कोशिश की है बरअक्स जुगाली करने और जुगाली न करने वाली सब्ज़ी खुरदन के निस्बत जुदाई का कोई ख्याल नही किया और न उनके सर के सींगों की तरफ निगाह डाली जिस से मसअला खुद बखूद हल हो जाता। अब हम मानुष की जगह जल–मानुष को पेश करते हैं जो मछली और मेंडक पर बसर करता है और बिल्कुल गोश्तखोर है। उस खास काम में इन्सान के मुशाबह(जैसा)है पस इन्सान का उस वक़्त ना जुडना क्योंकि सब्ज़ी खाने वालों से मुशाबह (जैसा) समझा जाता है इस गोश्तखोर के मुशाबह(जैसा) क्यों नहीं हमें समझा जाता है।

इसके अलावह इस जवाब में भी यही कहूँगा कि गोश्तखोर का यह फेअल (काम) अगर इन्सान के इस फेअल(काम) से मुशाबहत नही रखता तो भी इन्सान के गोश्तखोर न होने की दलील नहीं हो सकती क्योंकि इन्सान सिर्फ गोश्त खाता है। और यह जानवर गोश्त के अलावह हड्डी भी खाते हैं तो कुछ फर्क़ भी होना चाहिये और जब यह नबात खुरदन(घास,सब्जी खाने वाले) में सींग वाले और गैर–सींग वाले जुगाली करने वाले और जुगाली न करने वाले मौजूद हैं तो गोश्त खुरदन(मांसाहारियों) में भी कुछ से कुछ फर्क़ हो जाये तो कौन–सी क़ाबिले एतराज़ बात है पस यह बात साबित हुई कि इन्सान हर पहलू पर नज़र डालने के बाद भी गोश्तखोर ही साबित हुआ।

डाक्टर प्रभूदयाल साहब का सातवां सवाल

आँतें गोश्तखोर की छोटी होती हैं और नबातखोर की लम्बी होती हैं 32फुट की मसलन गाय, भेंस आदि?

जवाब नम्बर 7

यह सवाल तो आपने बिल्कुल उल्टा कर दिया क्योंकि आप ही के क़ौल के मुताबिक़ इन्सान गोश्तखोर साबित होता है क्योंकि इस की आँतें छोटी होती हैं मिस्ल गोश्त खोरों के।

डाक्टर प्रभूदयाल साहब का आठवां सवाल

बन्दर और लंगूर मिस्ल इन्सान के सूरत रखते हें और गोश्त नही खाते इस से मालूम हुआ कि इन्सान गोश्तखोर नहीं है।

जवाब नम्बर 8

जल–मानुष बिल्कुल इन्सान के मुशाबह (जैसा) और गोश्त खाता है, बंदर और लंगूर चार पैर से चलते हैं इसलिए इन्सान के मुशाबह(जैसे) नहीं मगर जल–मानुष दो पैर से चलते हैं इसलिए ज़्यादा (जैसा, मिलता–जुलता) मुशाबहत रखता है और बन्दर एक क़िस्म की जुगाली भी करता है यानी अव्वल अपनी कुल खुराक हलक़ के पास थेली में जमा कर लेता है इसके बाद फ़ुर्सत में खाता है इसलिए इन्सान की निस्बत नबात जैसे इसके काम मिलते हैं सिर्फ सुरत से क्या होता हे बल्कि अगर देखा जाये तो शेर की सूरत भी इन्सान की सूरत से बहुत मुशाबह(जैसी, मिलती–जुलती) होती है हत्ता कि दाढी तक शेर बब्बर की होती है ।

अगर खाने पर दारोमदार है तो बन्दर कच्ची खुराक खाता है इन्सान नहीं खा सकता, इसके अलावह बहुत–सी जंगल की ऐसी चीज़ें हैं जिनको यह बन्दर खाते हैं इन्सान नहीं खा सकता और इसी तरह बहुत सी चीज़ें यह नही खाते मगर इन्सान खाता है मसलन बन्दर संखिया खा लेता है और नही मरता, इन्सान अगर खाले तो हलाक हो जाता है बन्दर, रसमुलफार मिली हुई रोटी को नीम के पत्तों में थोंडी देर दबा कर उसको खा लेता है, लिहाज़ा बंदर को इन्सान की महज़ सूरत की बिना पर, मुशाबहत नही देना चाहिये। और यह भी मालूम नही कि यह क़सदन नहीं खाता या फितरतन क्योंकि हिन्दू इसको क़सदन नही खाते फितरतन तो खा सकते हैं और क़दीम ज़माने में खाते थे।

[बंदर जुएं खाते हैं, इस लिए वो मांसाहारी हैं]

डाक्टर प्रभूदयाल साहब का नौवां सवाल

गोश्त खाने से गुस्सा ज़्यादा पैदा होता है और गुस्सा हर मज़हब में हराम है इसलिए गोश्त न खाना चाहिये।

जवाब नम्बर 9

वाज़ेह हो कि जो कुव्वतें इन्सान को अता हुई हैं मिन्जुमला उनके एक कुव्वत शोक़िया है जिस का ताल्लुक़ दिमाग़ से है उसकी दो किस्में है (1)शेहवानिया (2)ग़ज़बिया कुव्वत, शेहवानी का काम तलब मनाफे है और कुव्वत ग़ज़बी का दफा ज़रर है, इस लिहाज़ से गुस्सा जिस्मे इन्सान के लिये बहतरीन और ज़रूरी चीज़ हुई गौर से सुनिये गुस्से को किसी मज़हब ने हराम नहीं कहा बल्कि अलबत्ता उसका बेजा इस्तेमाल और बे–मौके तसर्रुफ हराम हो सकता है दूसरी मिसाल और सुनिये महज़ बोलना हराम नहीं झुट बोलना हराम है, देखना हराम नही मगर जो चीज़ मना है उसका देखना हराम है, झुट बोलना हराम होने की वजह से बोलना हराम नहीं हो सकता वगेरह–वगेरा। इसी तरह गुस्सा हराम नही बल्कि बे–ज़रूरत गुस्सा हराम है इसकी मिसाल एक तलवार जैसी समझिये जो अपनी हिफाज़त के लिये रखी जाती है और दुश्मन और ज़ालिम का दफा उसका खास मक़सद होता है। पस अगर कोई खुद को उस से हलाक करले या किसी का नाहक़ ख़ून करदे तो यह काम हराम हुए न कि तलवार का रखना यक़ीन है कि आप इस बयान से गुस्से की हक़ीक़त समझ गये होंगे और अब मुझे इस बात पर गुफ्तगू करना ज़रूरी न रहा कि गोश्त से ज़्यादा गुस्सा पैदा होता है या नही क्योंकि अगर उसमे बक़ौल आपके गुस्सा ज़्यादा होता भी हो तो भी गौश्त खाने की हुरमत गुस्सा ज़्यादा पैदा होने की बिना पर साबित न हुई अगरचे यह कहना भी दुरूस्त नहीं है कि गोश्त गुस्सा ज़्यादा पैदा करता है।

डाक्टर प्रभूदयाल साहब का दसवां सवाल

गोश्तखोर चौपाये दो–चार एक जगह इकठठे नही हो सकते और नबात खाने वाले जैसे घोड़ा, गाये, हिरन, बन्दर वगेरा एक जगह हज़ारों रह सकते हैं, इस से मालूम होता है कि इन्सान गोश्तखोर नहीं है।

जवाब नम्बर 10

इस सवाल को देख कर मुझ को सख़्त हैरत होती है जब कि उर्दू लुग़त (डिक्शनरी) में एक शब्द झुंड मौजूद है जो गुर्ग (भेडिया, लाण्डगा) गीदड वग़ैरा की जमात के वास्ते बोला जाता है इसके अलावा जो इन्सान जंगल में फिरने वाले हैं उनसे दरयाफत करने से मालूम हो सकता है कि गीदड और भेडिया के झुण्ड के झुण्ड जंगल मे फिरते है या नहीं। खास इस शहर में रात के वक़्त जो गीदडों की आवाज़ सुनाई देती हैं इस से साफ ज़ाहिर होता कि कई एक मुत्तफिक़ हो कर चीख़ रहे हैं। उन सबको जाने दीजिये आख़िर तो आप इस

बात के क़ाइल होगें कि एक सहरा(रेगिस्तान) में हज़ारों जानवर रहते हैं इसी तरह इन्सान भी एक शहर में हज़ारों की तादाद में रहते हैं जिस तरह वह अलेहदा–अलेहदा भटार बना कर रहते हैं, इन्सान भी अलेहदा–अलेहदा मकान बना कर रहता है। अलबत्ता इन्सान कुछ नज़दीक–नज़दीक जगह की क़िल्लत की वजह से और कुछ–कुछ खास ज़रूरत की वजह से जैसे तालीम, ख़रीदो फरोख़्त, इबादतगाहें, अस्पताल वगेरा क्यूंकि उनकी खास ज़रूरत जानवरों की नहीं है और जगह भी काफी है। हिफ्ज़ान–ए–सेहत का ख्याल भी उनको ज़्यादा होता है इसलिए उनकी भटारें बनिस्बत हमारे मकानात के कुछ दूर–दूर होती हैं और सुनिये कि गोश्तखोर मकान बनाकर रहते हैं इन्सान भी मकान बना कर रहता है, मिस्ल चोपायों सब्ज़ीखोरों के आसमान के साये तले बसर नहीं करता है। बल्कि गोश्त खुरदन की तरह भटार बना कर रहता है। यह बहुत बडी दलील इन्सान के गोश्तखोर होने की है। अफसोस है कि आप का हर सवाल आप ही के लिये उल्टा सवाल और एक भी सही न साबित हुआ अब अगर आईंदा कोई सवाल करना हो तो सोच समझ कर कीजिये इस रूसवाई से क्या फायदा आप के सवालात के जवाबात ख़त्म हुए। अब आप बहुत जल्द इन जवाबात के सम्बंध में अपनी राये तहरीर फरमायें अगर इत्मिनान न हो तो मज़ीद इत्मिनान के लिये मैं तैयार हूं।

अब आपसे हमारे तीन सवाल

(1) गोश्त खाने वाले के बच्चे पैदा होने के बाद रफता–रफता चलने–फिरने के क़ाबिल होते हैं, जैसे शेर, बिल्ली, चीता आदि। सब्ज़ी खाने वाले के बच्चे पैदा होते ही चलने फिरने लगते हैं जैसे गाय, बकरी, हिरन आदि।
चुंकि इन्सान का बच्चा पैदा होने के बाद रफता–रफता चलने फिरने के क़ाबिल होता है इसलिए मालूम होता है कि वह फितरतन गोश्तखोर है अगर वह गोश्तखोर नहीं है तो क्यों नही मिस्ल सब्ज़ीखोर के पैदा होते ही चलने फिरने लगता है।

(2) जिस क़दर गोश्तखोर हैं उनके बच्चे पैदा होने के बाद पहले पाखाना फिरते हैं मगर नबातखोर(दाल,घास,सब्जी खाने वाले जानवरों) के बच्चे पैदा होने के बाद अव्वल पैशाब करते हैं इन्सान का बच्चा क्यूंकि पैदा होने के बाद पहले पाखाना फिरता है। लिहाज़ा यह गोश्तखोर है।

(3) गोश्तखोर भटार बना कर रहते हैं और सब्ज़ीखोर खुले मैदान या दरख़त(पेड) के नीचे बसर करते हैं इन्सान भटार(मकानं) में रहता है लिहाज़ा गोश्तखोर (मांसाखोर,–मांसाहारी) है। फक़्त

आर्यसमाज के सम्बन्ध में

इन्टरनेट पर उपलब्ध हिन्दी पुस्तकें

1. हक प्रकाश बजवाब सत्यार्थ प्रकाश : मौलाना सनाउल्ला अमृतसरी
2. सत्यार्थ प्रकाश समीक्षा की समीक्षा : सतीश चंद गुप्ता (New)
3. वेद और स्वामी दयानंद–हिन्दी : गाजी महमूद धर्मपाल
4. दयानंद जी ने क्या खोजा क्या पाया : डाक्टर अनवर जमाल
5. मुबाहिसा–ए–गोश्तखोरी हिन्दीः डाक्टर बशीर अहमद
6. चौदहवीं के चांद पर एक दृष्टि

اردو/उर्दू पुस्तकें:

1. हक प्रकाश बजवाब सत्यार्थ प्रकाश : मौलाना सनाउल्ला अमृतसरी
2. मुकददस रसूल : मौलाना सनाउल्ला अमृतसरी
3. तबर्रे इस्लाम बजवाब नखले इस्लाम : मौलाना सनाउल्ला अमृतसरी
4. तुर्के इस्लाम बजवाब तर्के इस्लाम : मौलाना सनाउल्ला अमृतसरी
5. स्वामी दयानंद और उनकी तालीमः खाजा गुलाम मुहम्मद हस्नेन (की 45 साल की महनत का नतीजा)
6. मुबाहिसा–ए–गोश्तखोरी उर्दूः डाक्टर बशीर अहमद
7. वेद का भेद (رسالہ) : मौलाना सनाउल्ला अमृतसरी
8. कुफर तोड : गाजी महमूद धर्मपाल
9. बुत शिकन : गाजी महमूद धर्मपाल
10. वेद और स्वामी दयानंद–उर्दूः गाजी महमूद धर्मपाल
11. स्वामी दयानंद का इल्मो अकल (رسالہ): मौलाना सनाउल्ला अमृतसरी
12. मुनाजरा हैद्राबाद (आर्य समाजी विद्वानों से सनाउल्ला और दूसरे उलमा का सात दिन का मुनाजरा)
13. मुबाहिसा–ए– शाहजहांपुर (मौलाना कासिम साहब का स्वामी दयानंद और इसाई पादरियों से 3 दिन का एतिहासिक मुनाजरा)
14. यजुर्वेद के दर्शन–यानि 24वां अध्याय (۱۲صفحے کا رسالہ): अब्दुल कबीर पूर्व धर्मवीर जी आर्य ने टाइटिल पर छपी जानकारी के मुताबिकं कुरबानी के मुखालिफीन के इत्मीनान के वास्ते 1926 में छपवाया।

सतीश चंद गुप्ता के ब्लाग पर भी

satishchandgupta.blogspot.in

उपरोक्त पुस्तकों के टार्गेट लिंक उपलब्ध हैं